BSOC-133 : SOCIOLOGICAL THEORIES

IMPORTANT QUESTIONS FOR EXAM

MUST WATCH TO SCORE GOOD MARKS

What did Marx mean by alienation. Explain.

मार्क्स के शब्दों में विलगीकरण से क्या अभिप्राय है ।सविस्तार लिखिए।

1. Alienation from the Product of Labor:

In a capitalist economy, workers do not own the goods they produce. They are simply paid a wage for their work, and the products they create belong to the capitalists (business owners). This creates a sense of disconnection, as the worker does not see the result of their work as an extension of themselves. Instead, it becomes something foreign or even hostile to them.

काम के उत्पाद से विलगीकरण:

पूंजीवादी समाज में श्रमिक जो वस्तु बनाते हैं, वह उनकी नहीं होती। श्रमिक को केवल काम के लिए वेतन मिलता है, और उत्पाद का स्वामित्व पूंजीपतियों के पास होता है। इस कारण श्रमिक को अपने काम के परिणाम से एक हद तक विलगित महसूस होता है, क्योंकि वह इसे अपने अस्तित्व का हिस्सा नहीं मान पाता, बल्कि यह एक बाहरी और शत्रुतापूर्ण वस्तु की तरह लगता है।

2. Alienation from the Labor Process:

In capitalist systems, work is often broken down into repetitive, monotonous tasks. Workers perform a small, specific task without having control over the whole process. They are reduced to mere cogs in the machine, doing work that has no personal or creative fulfillment. The worker is alienated from the act of labor because it is no longer an expression of their creativity or individuality.

काम के प्रक्रिया से विलगीकरण:

पूंजीवादी व्यवस्था में श्रम को छोटे-छोटे, दोहराए जाने वाले कार्यों में बांट दिया जाता है। श्रमिक अपने काम के पूरे प्रक्रिया पर नियंत्रण नहीं रखते। वह केवल एक छोटे से कार्य को करता है, जो न तो रचनात्मक होता है और न ही व्यक्तिगत संतुष्टि प्रदान करता है। इस प्रकार श्रमिक अपने श्रम से विलगित महसूस करता है क्योंकि यह अब उसकी रचनात्मकता या व्यक्तित्व का विस्तार नहीं होता।

Scholarly Minds

3. Alienation from Human Nature:

Marx argued that labor is a key part of human identity. It is through work that people can express their creativity, individuality, and potential. However, in capitalist systems, workers are forced to work simply to survive and make money, rather than to express themselves or develop their human potential. This process alienates them from their true human nature.

मानव स्वभाव से विलगीकरण:

मार्क्स का मानना था कि श्रम मानव पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। काम के माध्यम से ही व्यक्ति अपनी रचनात्मकता, व्यक्तित्व और क्षमता का प्रदर्शन कर सकता है। लेकिन पूंजीवादी समाज में श्रमिकों को केवल जीवित रहने और पैसे कमाने के लिए काम करना पड़ता है, न कि अपनी खुद की रचनात्मकता या मानव क्षमता को विकसित करने के लिए। इस प्रकार, यह प्रक्रिया उन्हें उनके असली मानव स्वभाव से विलगित कर देती है।

4. Alienation from Other People:

In capitalist societies, competition is encouraged. Workers are pitted against each other for jobs, wages, and opportunities. This fosters a sense of isolation and disconnection between people. Instead of collaborating, workers often see each other as rivals. The system of capitalism encourages individualism over community, which leads to alienation between people.

दूसरे लोगों से विलगीकरण:

पूंजीवादी समाजों में प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा दिया जाता है। श्रमिकों को नौकरी, वेतन और अवसरों के लिए एक-दूसरे से मुकाबला करना पड़ता है। इस प्रतिस्पर्धा के कारण लोग एक-दूसरे से अलग-थलग महसूस करते हैं। श्रमिकों के बीच सहयोग की भावना की जगह प्रतिद्वंदिता आ जाती है। पूंजीवाद समुदाय के मुकाबले व्यक्तिगत स्वार्थ को प्राथमिकता देता है, जो समाज में लोगों के बीच विलगाव को बढ़ाता है।

In short, Marx's theory of alienation explains how capitalism leads to a situation where workers become disconnected from the results of their labor, the work process itself, their human essence, and from other people. This alienation, according to Marx, is a key aspect of why capitalism is inherently exploitative and dehumanizing.

संक्षेप में, मार्क्स का विलगीकरण का सिद्धांत यह समझाता है कि कैसे पूंजीवाद एक ऐसी स्थिति पैदा करता है जिसमें श्रमिक अपने श्रम के परिणाम, काम की प्रक्रिया, अपने मानव स्वभाव और दूसरों से विलगित हो जाते हैं। मार्क्स के अनुसार, यह विलगीकरण पूंजीवाद के शोषणात्मक और अमानवीय स्वभाव को दर्शाता है।

Discuss Durkheim's central idea in the study of suicide.

आत्महत्या के अध्ययन में दुर्खीम के प्रमुख विचार की विवेचना कीजिए।

Émile Durkheim, a French sociologist, is considered one of the founding figures of modern sociology. In his work *"Le Suicide"* (1897), Durkheim explored the social causes of suicide.

Scholarly Minds

He argued that suicide is not simply a personal act, but is heavily influenced by social factors, such as the degree of social integration and regulation within society.
एमीले दुर्खीम, एक फ्रांसीसी समाजशास्त्री, आधुनिक समाजशास्त्र के संस्थापक माने जाते हैं। अपनी पुस्तक *"Le Suicide"* (1897) में, दुर्खीम ने आत्महत्या के सामाजिक कारणों का अध्ययन किया। उनका कहना था कि आत्महत्या केवल एक व्यक्तिगत कार्य नहीं है, बल्कि यह समाज में सामाजिक एकीकरण और नियंत्रण की डिग्री जैसे सामाजिक कारकों से प्रभावित होती है।

Social Integration and Social Regulation

सामाजिक एकीकरण और नियंत्रण

Durkheim believed that suicide rates are influenced by two main social factors: **social integration** and **social regulation**. These are the two key aspects of how society shapes the individual's behavior and mental state.
दुर्खीम का मानना था कि आत्महत्या की दरें दो मुख्य सामाजिक कारकों द्वारा प्रभावित होती हैं: सामाजिक एकीकरण और सामाजिक नियंत्रण। ये दो मुख्य पहलू हैं जिनके माध्यम से समाज व्यक्ति के व्यवहार और मानसिक स्थिति को आकार देता है।

- **Social Integration (सामाजिक एकीकरण):** This refers to the degree to which individuals feel connected to their society, family, or community. When people feel connected and supported by their social groups, they are less likely to commit suicide.
  सामाजिक एकीकरण (Social Integration): यह उस हद को दर्शाता है, जिस हद तक व्यक्ति अपने समाज, परिवार या समुदाय से जुड़ा हुआ महसूस करता है। जब लोग अपने सामाजिक समूहों से जुड़े और समर्थित महसूस करते हैं, तो वे आत्महत्या करने की संभावना कम रखते हैं।
- **Social Regulation (सामाजिक नियंत्रण):** This refers to the extent to which society regulates individual desires, behaviors, and actions. If a person's desires are not controlled or guided by society, they may feel lost or disconnected, leading to suicide.
  सामाजिक नियंत्रण (Social Regulation): यह उस हद को दर्शाता है, जिस हद तक समाज व्यक्तिगत इच्छाओं, व्यवहारों और क्रियाओं को नियंत्रित करता है। यदि व्यक्ति की इच्छाएँ समाज द्वारा नियंत्रित या मार्गदर्शित नहीं की जातीं, तो वह खोया हुआ या अलग-थलग महसूस कर सकता है, जो आत्महत्या की ओर ले जा सकता है।

Types of Suicide According to Durkheim

दुर्खीम के अनुसार आत्महत्या के प्रकार

Durkheim classified suicide into four types based on the relationship between the individual and society:
दुर्खीम ने आत्महत्या को चार प्रकारों में बांटा, जो व्यक्ति और समाज के बीच संबंध पर निर्भर करते हैं:

1. **Egoistic Suicide (अहम् आत्महत्या):**
   Egoistic suicide occurs when an individual feels too disconnected from society or group. This type of suicide is common among people who are isolated, such as those with weak family bonds or social connections. These individuals lack a sense of

belonging or purpose, leading to feelings of despair and eventually suicide.

अहम् आत्महत्या (Egoistic Suicide):

अहम् आत्महत्या तब होती है जब व्यक्ति समाज या समूह से बहुत अधिक अलग-थलग महसूस करता है। यह प्रकार तब आम होता है जब लोग समाज से अलग होते हैं, जैसे जिनका परिवार या सामाजिक संबंध कमजोर होता है। इस प्रकार के व्यक्ति को अपनापन या उद्देश्य की कमी महसूस होती है, जिससे निराशा और अंततः आत्महत्या होती है।

2. **Altruistic Suicide (परार्थ आत्महत्या):**
   Altruistic suicide happens when individuals are too strongly integrated into their society or group, and they sacrifice their life for the benefit of the group. This is seen in cases like soldiers dying for their country or people committing suicide for religious reasons. In these cases, suicide is seen as a noble act for the greater good of society.

   परार्थ आत्महत्या (Altruistic Suicide):

   परार्थ आत्महत्या तब होती है जब व्यक्ति अपने समाज या समूह में अत्यधिक एकीकृत होते हैं और समूह के भले के लिए अपनी जान दे देते हैं। यह उस स्थिति में देखा जाता है जैसे सैनिक अपने देश के लिए मरते हैं या लोग धार्मिक कारणों से आत्महत्या करते हैं। इन मामलों में, आत्महत्या को समाज के भले के लिए एक उदार कृत्य माना जाता है।

3. **Anomic Suicide (अराजक आत्महत्या):**
   Anomic suicide occurs during times of social upheaval, such as economic depression or political crisis, when society's norms and values are disrupted. People who experience anomie (a state of normlessness) feel disconnected and unable to cope with the changes, leading them to commit suicide.

   अराजक आत्महत्या (Anomic Suicide):

   अराजक आत्महत्या तब होती है जब समाज में गड़बड़ी होती है, जैसे आर्थिक मंदी या राजनीतिक संकट के समय, जब समाज के नियम और मूल्य विघटित होते हैं। जो लोग अराजकता (normlessness) का अनुभव करते हैं, वे खुद को अलग-थलग और बदलावों से निपटने में असमर्थ महसूस करते हैं, जिससे वे आत्महत्या करते हैं।

4. **Fatalistic Suicide (निराश आत्महत्या):**
   Fatalistic suicide happens when individuals are excessively controlled or oppressed by society. This can happen in situations where people feel there is no hope for change or improvement in their lives, such as in abusive relationships or overly strict conditions.

   निराश आत्महत्या (Fatalistic Suicide):

   निराश आत्महत्या तब होती है जब व्यक्ति समाज द्वारा अत्यधिक नियंत्रित या दमनात्मक होते हैं। यह उन स्थितियों में हो सकता है जहाँ लोग महसूस करते हैं कि उनके जीवन में बदलाव या सुधार की कोई संभावना नहीं है, जैसे शोषणकारी रिश्तों या अत्यधिक कड़े हालात में।

Explain the social impact of the doctrine of predestination.

पूर्व नियति के सिद्धांत के सामाजिक प्रभाव की व्याख्या कीजिए।

Social Impact of the Doctrine of Predestination

पूर्व नियति के सिद्धांत के सामाजिक प्रभाव

Scholarwinds

The doctrine of predestination says that God has already decided whether a person will go to heaven (be saved) or hell (be damned) before they are born. This idea, especially in Calvinism, had many effects on society, people's behavior, and even the economy.

पूर्व नियति के सिद्धांत के अनुसार, भगवान ने पहले से तय कर लिया है कि कोई व्यक्ति स्वर्ग जाएगा (उद्धार पाएगा) या नरक जाएगा (शापित होगा), यह जन्म से पहले ही तय हो चुका होता है। यह विचार, विशेष रूप से कैल्विनवाद में, समाज, लोगों के व्यवहार और यहां तक कि अर्थव्यवस्था पर कई प्रभाव डालता था।

1. Strong Work Ethic (मजबूत कामकाजी नैतिकता)

In Calvinist societies, people believed that if they worked hard, earned money, and lived well, it might be a sign that they were chosen by God to be saved (the "elect"). So, they worked harder and lived disciplined lives, thinking it would prove they were among the chosen ones. This helped develop a strong work ethic and influenced the rise of capitalism.
कैल्विनवादी समाजों में, लोग मानते थे कि अगर वे कड़ी मेहनत करते हैं, पैसा कमाते हैं और अच्छा जीवन जीते हैं, तो यह इस बात का संकेत हो सकता है कि वे ईश्वर द्वारा उद्धार के लिए चुने गए हैं (चयनित)। इसलिए, उन्होंने कड़ी मेहनत की और अनुशासित जीवन जीने की कोशिश की, जिससे मजबूत कामकाजी नैतिकता का विकास हुआ और पूंजीवाद का जन्म हुआ।

2. Social Inequality (सामाजिक असमानता)

Because people believed that success and wealth were signs of God's favour, they started seeing rich and successful people as the “elect.” On the other hand, poor or suffering people were sometimes viewed as "damned" or punished by God. This created divisions in society and made social inequalities seem acceptable.
क्योंकि लोग मानते थे कि सफलता और धन ईश्वर की कृपा के संकेत हैं, उन्होंने अमीर और सफल लोगों को "चयनित" समझना शुरू कर दिया। दूसरी ओर, गरीब और दुखी लोगों को कभी-कभी "शापित" या ईश्वर द्वारा दंडित माना जाता था। इससे समाज में विभाजन और सामाजिक असमानताएँ बढ़ गईं।

Scholarly Minds